1. नारी उत्पीड़न

स्त्री चुप रहे :

''स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु वह चुपचाप रहे। क्योंकि आदम पहिले, उसके बाद हव्वा बनाई गई। आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकावे में आकर अपराधिनी हुई।'' (**तीमुथियुस के नाम पौलुस का पहला पत्र** 2 : 11-13)

बदले के लिए विवाहितों का कत्ल और कुवाँरियों का बँटवारा

मूसा ने सभी सेनापतिओं से, जो युद्ध से लौटकर आये थे, क्रोधित होकर कहा— *''क्या तुमने सभी स्त्रियों को जीवित छोड़ दिया ? देखो ! बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राइलियों से प्रभु का विश्वासघात इन्होंने कराया था, और प्रभु की मंडली में महामारी फैली थी। सो अब बाल बच्चों में से हर एक लड़के को और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो, उन सबका घात करो। परन्तु जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह नहीं देखा हो, उन सबको तुम अपने लिए जीवित रखो* (**गिनती** 31 : 14-18)।''ऐसी स्त्रियाँ जिन्होंने पुरुष का मुँह नहीं देखा था वे सब बत्तीस हजार थी।'' (**गिनती** 31 : 35)

इन सबको सैनिकों, सेनानायकों आदि ने बाँट लिया। यह सब इस्राएलियों ने मिश्रानियों से प्रभु की आज्ञा से बदला लेने के लिए किया। इस प्रकार युद्ध में पकड़ी गई औरतों का मूसा की आज्ञा से कत्ल किया गया, जिन्होंने पुरुषों का मुँह देखा था या जो विवाहित थी, और अविवाहित महिलाओं का बँटवारा किया गया। इन महिलाओं ने युद्ध में न तो किसी का सामना किया था न कुछ मार-काट। ईसाइयों के धर्मशास्त्र में इन निहत्थी, बेकसूर महिलाओं को कत्ल का आदेश देना क्या किसी भी तर्क से न्यायोचित माना जा सकता है ? ऐसे अत्याचारों का आदेश देनेवाला, पुष्ट करने वाला कोई शास्त्र क्या धर्मशास्त्र कहा जा सकेगा और ऐसी आज्ञा देनेवाली पुस्तक क्या धार्मिक कही जाएगी'? हव्वा को स्त्री होने के कारण शाप दिया गया

कि प्रभु परमेश्वर द्वारा उसकी पीड़ा एवं गर्भवती होने के दुःख को बहुत बढ़ाया जाएगा, वह पीड़ित होकर जनन करेगी और उसकी लालसा उसके पति की ओर होगी और वह उस पर प्रभुता करेगा। (**उत्पत्ति 3 : 16**) इस प्रकार संसार की सभी स्त्रियाँ शापित हुईं।

स्त्री का सृजन पुरुष के लिए

कुरिन्थुस नगर, यूनान का एक समृद्ध नगर, राजधानी एवं व्यापार केन्द्र होने के साथ अनैतिकता एवं अधार्मिकता का केन्द्र था। संत पौलुष ने वहाँ तीन वर्ष तक रहकर प्रवचन दिया था। फिर पौलुष ने वहाँ की कलीसिया के नाम एक प्रथम पत्र लिखा था। उसी में एक बड़ी दर्दनाक बात कही गई है कि *''पुरुष को अपना सिर ढँकना उचित नहीं, क्योंकि वह परमेश्वर का स्वरूप एवं महिमा है और स्त्री पुरुष की महिमा है। पुरुष स्त्री से नहीं हुआ, परन्तु स्त्री पुरुष से हुई है। पुरुष स्त्री के लिए नहीं सिरजा गया है; परन्तु स्त्री पुरुष के लिए सिरजी गई है।* (1 **कुरंथियों** 11 : 7-9) इसी परिच्छेद में एक स्थान पर बताया गया है कि 'हर एक पुरुष का सिर मसीह है और स्त्री का सिर पुरुष है और मसीह का सिर परमेश्वर है।'' यानी इसका सीधा-साधा अर्थ यह हुआ कि स्त्री की कोई हस्ती नहीं है, उसको पुरुष के लिए बनाया गया है, उसका कोई अन्य अस्तित्व नहीं है।

स्त्री अधीन रहे

''स्त्रियों को चर्च में चुप रहना चाहिए क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। यदि वे कुछ सीखना चाहें तो घर में अपने पति से पूछे, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।'' (**1 कुरंथियों** 14 : 34-35)

''परन्तु जो स्त्री नंगे सिर प्रार्थना या भविष्यवाणी करती है...... वह मुण्डी होने के बराबर है। यदि स्त्री ओढ़नी न ओढ़े, तो बाल भी कटा लें...... अन्यथा ओढ़नी ओढ़ें।'' (1 **कुरंथियों** 11 : 5-6)

''......और तेरे पति को छोड़ किसी दूसरे पुरुष ने तुझसे संभोग किया हो, और याजक उसे शाप देनेवाली शपथ खिलाकर कहे, प्रभु तेरी जाँघ सड़ाये और तेरा पेट फुलाए और लोग तेरा नाम लेकर शाप और धिक्कार दिया करें।'' (**गिनती** 5 : 20)

''यदि कोई पुरुष किसी स्त्री को ब्याह ले, और उसमें कुछ लज्जा की बात पाकर उससे अप्रसन्न हो, तो वह उसके लिए त्यागपत्र लिखकर और उसके हाथ में देकर उसको अपने घर से निकाल दे। जब वह अपने घर से निकल जाए तो वह दूसरे पुरुष की हो सकती है।'' (**व्यवस्था विवरण** 24 : 1-2)

तो यह है स्त्रियों को दासता, अपमान एवं मुँह बंद रखवाने की बाइबिल की दास्तान। स्त्री को अधीन रहना है मर्द के, उसी की आज्ञा मानना है, यदि उसने ऐसा नहीं किया तो पुरुष त्यागपत्र लिखकर उसको घर से बाहर निकाल सकता है। उसे चुपचाप अपने पुरुष के अधीन रहना है, न तो वह उपदेश कर सकती है, न ही पुरुष पर हुक्म चला सकती है।

अनैतिक सम्बधों को प्रोत्साहन

1. बाप को एक विकल्प है कि वह अपनी जवान बेटियाँ—जो कुँवारी हों, उनको भीड़ को समर्पित कर सकता है और भीड़ उन लड़कियों के साथ मनचाहा व्यवहार कर सकती है। किसी भी दासी को पुरुष अपने संभोग के लिए उपयोग में ला सकता है। अब्राहम ने हाजिरा के साथ सहवास किया और वह गर्भवती हुई। किन्तु अब्राहम की पत्नी ने हाजिरा को खूब दु:ख दिए, जिससे वह भाग गई। (**उत्पत्ति** : 19 : 8; 16 : 4 - 6)

2. बाप की रखेल एक तरीके से माँ होती है; किन्तु रूबेन ने जाकर अपने पिता की रखेल बिल्हा से कुकर्म किया (**उत्पत्ति** 35 : 22)। यह कैसा धर्म-कर्म है ?

3. तब यहूदा ने ओनान से कहा, *''अपनी भाभी' के पास जा और उसके साथ देवर का धर्म पूरा करके, अपने भाई के लिए संतान उत्पन्न कर''* (**उत्पत्ति** 38 : 8)—इस प्रकार से कुकर्म करने को कहा जाता है, क्योंकि उसे धर्म को पूरा करना है। औरत को ना-नू करने या विरोध करने का अधिकार भी नहीं है, क्योंकि वह जानदार नहीं है. यदि उसने सप्राण समझकर कुछ आपत्ति की, तो वह गाजर-मूली के समान काटी भी जा सकती है। उसे तो बस मर्दों की आज्ञा मानना है।

4. बाइबिल बर्बर समाज व्यवस्था की प्रचारक कही जा सकती है। देखिये बानगी, *'' जब यहूदा ने उसको देखा, उसने उसको वेश्या समझा, क्योंकि वह अपना मुँह ढाँपे हुई थी। वह मार्ग में उसकी ओर फिरा, और उससे कहने लगा, मुझे अपने पास आने*

दे'' (क्योंकि उसको मालूम न था कि वह उसकी बहू है)। वह कहने लगी, *'' यदि मैं तुझे अपने पास आने दूँ, तो तू मुझे क्या देगा ?''* उसने कहा, *'' मैं अपनी बकरियों में से एक बकरी का बच्चा तेरे पास भेज दूँगा।''* तब उसने कहा—*'' भला उसको भेजने तक क्या तू हमारे पास कुछ रेहन रख जाएगा''* उसने पूछा—*मैं तेरे पास क्या रेहन रख जाऊँ?''* उसने कहा, *'' अपनी मुहर और बाजूबन्द और अपने हाथ की छड़ी।" तब उसने उसको वे वस्तुएँ दे दी, और उसके पास गया, और वह उससे गर्भवती हुई।* (**उत्पत्ति** 38 : 15-18)

क्या आप इस पर विश्वास कर सकेंगे कि वर्षों तक साथ में रहने वाली बहू की आवाज उसका श्वसुर पहचान न सकेगा भले ही बाइबिल के वर्णन के अनुसार बहू ने बातचीत के समय अपना मुँह ढँक रखा था, तो क्या उसके हाथ एवं पैर को भी श्वसुर न पहचान पाया ? क्या शारीरिक सहवास के समय भी श्वसुर को अपनी बहू का चेहरा देखने का अवसर नहीं मिला ? और उस बहू की भी बलिहारी, जिसे अपने श्वसुर को छोड़कर कोई मर्द ढूँढे नहीं मिला। क्या आपको डीन फरार के इस कथन पर भरोसा आ गया न, कि **'बाइबिल बर्बर लोगों के लिए, बर्बर युग में लिखी गई, एक बर्बर पुस्तक है ?'**

बाइबिलीय न्याय

''यदि उस कन्या में कुंवारीपन के चिह्न न पाए जाएँ, और उस पुरुष की बात सत्य ठहरे, तो वे उस कन्या को उसके पिता के घर के द्वार पर ले जाएं, और उस नगर के पुरुष उसको पत्थरवाह करके मार डालें।'' (**व्यवस्था विवरण** 22 : 20-21)

क्या ऐसे समाज को कोई सभ्य या धार्मिक कह सकेगा ? कन्या को उसके पिता के घर ले जाकर मार डालना, कन्या के पिता, माता, भाई एवं बहिन सभी को सजा देना नहीं होगा क्या ? फिर उस नगर के मनुष्यों का भी क्या कहना कि पति की बात पर विश्वास करके, उसकी पत्नी को पत्थरों से मारने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं ? कहीं ऐसी वीभत्स सजा अन्यत्र आपने सुनी भी है ? बाइबिल के अनुसार यदि कन्या को दंड दिया जाता है, तो उससे बलात्कार करने वाले पुरष को कोई भी दंड क्यों नहीं दिया जाता है, महज इसीलिए कि वह एक मर्द है, उसके लिए सब कुछ जायज है, क्योंकि परमेश्वर ने उसको मिट्टी से बनाकर उसके

'वाह री ईसाई न्याय व्यवस्था ! औरत को कुँवारीपन सिद्ध करना जरूरी है, अन्यथा वह पत्थरवाह करके मार दी जाएगी, किन्तु उसके पति को सम न्याय सिद्धान्त के अनुसार अपना ब्रह्मचारीपन सिद्ध करने को क्यों नहीं कहा जाना चाहिए ? न्याय व्यवस्था की आधारशिला होती है, समदृष्टि एवं निष्पक्षता, न कि पक्षपात। ऐसा पक्षपात करनेवाली व्यवस्था (न्याय की हो या धर्म की) कभी न्यायसंगत नहीं कही जा सकती है। इस पर से तो हमें वाल्टेयर के इस निष्कर्ष पर पहुँचने को बाध्य होना पड़ेगा कि—

'ईसाईयत सर्वाधिक हास्यास्पद, सर्वाधिक बेतुका एवं खून का प्यासा धर्म है, जो विश्व में शायद ही प्रभावी रहा हो'

शायद अभी भी थोड़ी आस्था आप में शेष रही होगी तो बाइबिल में उसको ध्वस्त करने की फौलादी ताकत है।

अब्राहम का जान बचाने के लिए पत्नी को बहिन बताना

अकाल पड़ने के कारण अब्राहम अपनी पत्नी सारा को लेकर मिस्र देश जाता है। सीमा पर पहुँचने पर वह उसको कहता है '*'तू एक सुन्दर स्त्री है, लोग तुझको देखकर मुझको मार डालेंगे और तुझको जीवित रखेंगे, अत: तू स्वयं को मेरी बहिन के रूप में बताना, तो वे मुझे जीवित रखेंगे, जिससे तेरे कारण मेरा कल्याण होवें।' सारा ने ऐसा ही किया और सारा को फिरौन के महल में रख लिया गया।''* (**उत्पत्ति** 12 : 12-16)

वाहरे बाइबिल के शूरवीर मर्द तू अपनी जान बचाने की खातिर अपनी पत्नी द्वारा उसकी बहिन बताने पर बच जाता है, कोई प्रतिकार नहीं करता है और एवज में उपहार स्वीकार करता है ? क्या भड़ुवाई का इससे अच्छा उदाहरण कहीं अन्यत्र मिलेगा ? होना तो यह चाहिए था कि वह अपनी और अपनी पत्नी की इज्जत बचाने हेतु मर्दानगी दिखाता या तो लड़ मरता या स्वयं को और अपनी पत्नी को उसकी इच्छा देख समाप्त कर देता। जो पति अपनी प्राण रक्षा हेतु पत्नी की इज्जत का सौदा करे, उस जैसे नराधम का तो धर्मग्रंथ में जिक्र ही नहीं आना चाहिए, अन्यथा उसको धर्मग्रंथ निरूपित करना भी धर्मग्रंथ का मखौल होगा।

बहिन से शादी

इन्हीं अब्राहम महोदय ने अपनी बहिन से शादी रचा ली क्योंकि—'' *फिर भी*

वह मेरी पत्नी हो गई।'' उसने यह सोचकर यह कार्य किया था ''कि इस स्थान पर परमेश्वर का कुछ भय न होगा। ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरी हत्या करेंगे। '' (**उत्पत्ति** 20 : 1) क्या उम्दा बहाना है एक ही पिता से उत्पन्न लड़की, उसकी बहिन तो हुई पर एक ही माता से दोनों उत्पन्न न होने के कारण उसके शादी करने लायक भी हो गई। सच में बाइबिल के इस संदर्भ का निर्वचन किया जाए तो बहिन की सुन्दरता ही उसकी बैरी हो गई और घर ही घर में विवाह निपट गया—धर्म शास्त्र का पात्र भी यह कह कर बरी हो गया कि वह उसकी माँ-जायी नहीं है। क्या पापकर्म करवाने एवं अपराध करनेवाले ऐसे ही बहाने नहीं बनाते हैं ? यह है बाइबिल की नैतिकता।

बेटी को दासी होने के लिए बेचना

महिला अत्याचारों से भरपूर है बाइबिल। यह किसी भी बुद्धिमान एवं जिज्ञासु जन की समझ के बाहर है कि दुनिया की सर्वश्रेष्ठ धर्म पुस्तक कहीं जाने वाली बाइबिल ने महिलाओं पर कितने अमानुषिक अत्याचारों को हवा दी, और उनका अनुमोदन किया। 'यदि कोई अपनी बेटी को दासी होने के लिए बेच डाले'.......यदि उसका स्वामी उसको अपनी पत्नी बनाये और फिर उससे प्रसन्न न रहे, तो वह उसे दाम से छुड़ाई जाने दे; उसका विश्वासघात करने के बाद उसे ऊपरी लोगों के हाथ बेचने का उसको अधिकार न होगा।' (**निर्गमन** 21 : 7-8)

कितना आसान तरीका सुझाया गया है, किसी लाचार बाप की बेटी को खरीद लो, उसको पत्नी के नाम से रखो, व्यभिचार करो, दिल भर जाये, लाचार व्यक्ति उसको दाम देकर छु डा ले तो ठीक, वरना उसे पुन: दासी के रूप में ही रखो। एक दासी के मन व जिस्म सभी पर उसके स्वामी का अधिकार होता है, इस प्रकार लगता है कि बाइबिल में व्यभिचार को नियमन कर दिया गया है।

युद्ध बन्दी स्त्रियों से मनचाहा व्यवहार

'यदि युद्ध में विजय में शत्रुओं की औरतें (सुन्दर हो) को देखकर मोहित हो जावे तो उसे पत्नी बना लो, फिर मन भर जाने पर निकाल दो। (**व्यवस्था विवरण** 21 : 10-14) बाइबिल ने हर पराई औरत को पत्नी बना लेने की छूट देकर व्यभिचार को कानूनी जामा, धर्म-कर्म बना दिया है। वास्तव में यह खुले व्यभिचार को धर्म का आवरण पहनाना नहीं है क्या ?

स्त्रियाँ एक सामान है, उसका मालिक उसका चाहे जैसा उपयोग कर सकता है, खुद व्यभिचार कर सकता है, दूसरों से करवा सकता है, अवसर आने पर घर से निकाल सकता है, मार-पीट कर सकता है, असह्य पीड़ा दे सकता है, उन्हें दासी बना सकता है, पत्नी का नाम देकर अपनी कामुकता की संतुष्टि कर सकता है और मन भर गया तो उसी पत्नी रूपी सामान को धक्के मारकर निकाल सकता है, उस महिला की बच्चियाँ हुई तो उन्हें बेच सकता है, महिला को खत्म भी कर सकता है, क्योंकि बाइबिल के अनुसार महिला के तन, मन एवं धन पर उसके पति या मालिक, जैसी भी स्थिति हो, का पूरा-पूरा अधिकार रहता है। औरतों को रखेलों के समान पालकर विधवा जैसी जिन्दगी जीने को बाध्य कर सकता है। (2 शमूएल - 20 : 3) उनको जीवित होते हुए भी मृतक की जिन्दगी एक कमरे में बंद होकर गुजारनी पड़ सकती है।

युद्ध में शत्रुओं को विजित करके········तलवार के घाट सभी पुरुषों को उतार दो। परन्तु स्त्रियों, बाल बच्चों और पशु आदि जितनी लूट उस नगर में हो उसे अपने लिए रख लो। लीजिए! बाइबिल की अनुज्ञा मिल गई। आदमियों को काट डालो और उनके माल-स्त्रियों, पशु बालबच्चों को अपने लिए रख लो। यानि वह विजेता की संपत्ति हो गई। वह चाहे तो पूरा घर युद्ध में जीती गई औरतों से भर ले और अपनी कामुकता की उनसे अपनी मर्जी अनुसार संतुष्टि कर ले। औरतें पालतू पशु के समान या निर्जीव सामान के समान, उसकी हर आज्ञा जायज या नाजायज पालने को धार्मिक कानून, सामाजिक व्यवस्था की रूह से बाध्य है। उनके बाल बच्चे भी उनको जीत कर प्राप्त करने वाले की मर्जी पर रहेंगे, चाहे तो वे उनसे गुलामों जैसा व्यवहार करें, चौबीसों घंटे काम करवाएँ और उनको जिन्दा रखने लायक खाना देवें यानि वे भी पशु ही हो गये और मालिक की मर्जी पर जीने को मजबूर।

गर्भवती महिलाओं का भी बाइबिल में क्या हश्र होता है जरा देखें ? बडी स्पष्ट उक्ति में बताया गया है— *'सामरिया दोषी ठहरेगा, क्योंकि उसने अपने परमेश्वर से बलवा किया है, वे तलवार से मारे जाएंगे, उनके बच्चे पटके गाएंगे और उनकी गर्भवती स्त्रियाँ चीर डाली जाएँगी।'* **(होशे 13 : 16)**

पुत्र-पुत्री में भेद

'फिर प्रभु ने मूसा से कहा, 'इस्राइलियों से कह, कि जो गर्भिणी हो और उसके लड़का हो, तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी; जिस प्रकार वह ऋतुमती होकर

अशुद्ध रहा करती थी। आठवें दिन लड़के का खतना किया जाए। फिर वह स्त्री अपने शुद्ध करने वाले रुधिर में तैंतीस दिन रहे। जब तक उसके शुद्ध हो जाने के दिन पूरे नहीं हो तब तक वह न तो किसी पवित्र वस्तु को छूए, और न पवित्र स्थान में प्रवेश करे। यदि उसके लड़की पैदा हो, तो उसको ऋतुमती की सी अशुद्धता चौदह दिन की लगे। फिर छियासठ दिन तक अपने शुद्ध करनेवाले रुधिर में रहे।' (**लैव्यवस्था**-12 : 1-5)।

इस प्रकार लड़के एवं लड़की के जन्म से, बाइबिल में लड़के के प्रति पक्षपात एवं लड़की की अवमानना आरम्भ हो जाती है, जो उसकी महिला बनने के बाद भी आजीवन चलती रहती है। क्या मातृशक्ति का यह सरासर अपमान नहीं है ? मातृशक्ति का पुरुषों द्वारा यह क्या अपमान एवं अत्याचार नहीं है ? इसी दुर्भावना के कारण लड़का होने पर खुशी और लड़की होने पर मातम मनाया जाने की कुप्रथा आरम्भ हुई। क्या यह नासमझी की बात नहीं है ? यदि औरत न होगी तो पुरुष की झोली में प्यार, लाड़-दुलार, सेवा, रंगीनी कौन डालेगा, क्या बिन नारी सब दुखारे नहीं होंगे ?

पक्षपाती दण्डविधान

जरा ईसाई दंड विधान का भी अवलोकन करें, तो हमें स्त्रियों के प्रति अन्याय के बेइंतहाई से रूबरू होना पड़ेगा। '*'यदि कोई पराई स्त्री के साथ व्यभिचार करे, तो जिसने दूसरे की स्त्री के साथ व्यभिचार किया हो तो वह व्यभिचारी और वह व्यभिचारिणी, दोनों निश्चय मार डाले जाएँ।* (**लैव्वस्था** 20 : 10)) सामान्य न्याय सिद्धान्तों में ऐसा अपराध किया जाने पर व्यभिचारी पुरुष के लिए दंड का प्रावधान किया गया है किन्तु ईसाई धर्म विधान में स्त्री को भी मार डाले जाने की व्यवस्था की गई है, बिना इस बात की पड़ताल किये कि कमजोर स्त्री से जोर-जबरदस्ती हुई थी या नहीं ? यदि ऐसा हो तो मौत की सजा मर्द को ही दी जाना चाहिए न कि स्त्री को, वह एक शक्तिमान मर्द के जोर-जुल्म का प्रतिकार कैसे करती ?

'यदि कोई अपनी सौतेली माता के साथ सोए, वह अपने पिता का तन उघाड़नेवाला ठहरेगा। यदि कोई अपनी बहू के साथ सोए, तो दोनों को निश्चय मार डालें जाएं। क्योंकि वे उल्टा काम करनेवाले ठहरेंगे और उनका खून उन्हीं के सिर पड़ेगा'' ''यदि कोई अपनी पत्नी एवं सास दोनों को रखे तो यह महापाप है। इसलिए वह पुरुष और वे स्त्रियाँ, तीनों आग में जलाएं जाएं, जिससे तुम्हारे बीच महापाप

न हो। यदि कोई स्त्रीगमन की रीति से पुरुष के साथ सहवास करे, तो वे दोनों घिनौना काम करने वाले ठहरेंगे। इस कारण वे निश्चय मार डाले जाएंगे।" (**लैव्यवस्था** 20 : 11-14)"

इस प्रकार दुराचारिणी एवं सदाचारिणी साध्वी नारी को एक समान दंड का भागी होना पड़ेगा और वह भी मृत्युदंड। महिला के अपराध में सहभागी होने का कोई अभिनिश्चिय किये बिना ही वह महिला दंडस्वरूप मृत्युदंड की सजा भुगतेगी। यह कोई नहीं कहेगा कि महिला दुराचार के अपराध में सहअपराधी नहीं हो सकती है, किन्तु जहाँ कहीं भी महिला एवं पुरुष के दुराचार के अपराध का विश्लेषण का प्रश्न हो वहाँ महिला की सहभागिता जबतक सिद्ध निस्संशय न हो जाए तब तक उसको दोषी करार देकर मौत की सजा देना न तो दंडव्यवस्था, न धर्म, न न्याय, न समाज व्यवस्था के लिए श्रेयस्कर एवं जायज कहा जाएगा। ऐसी दंडव्यवस्था करनेवाली पुस्तक को कोई भी धर्म की पुस्तक कह नहीं सकेगा ?

बेकसूर नारी पर अत्याचार व हत्या

1. *"उनके गिबा में पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई, वे नगर के चौक में बैठ गये, किसी ने उनको अपने घर रूकने नहीं दिया। उसी समय एक बूढ़ा अपने खेत से अपने घर लौट रहा था, उसने उनको वहाँ बैठे देखा। बूढ़े ने उनको अपने घर ठहरा लिया। वे खाना-पीना कर रहे थे, तब ही गाँव के लुच्चों ने बूढ़े के घर को घेर लिया और द्वार की पीटकर कहने लगे, 'जो पुरुष तेरे घर आया, उसे बाहर ले आ, कि हम उससे भोग करें।' बूढ़े ने उनको ऐसा न करने को कहा तो वे नहीं मानें, तब बूढ़े ने अपनी कुँवारी बेटी और मेहमान की रखेल को उनको उनकी पत-पानी लेने और जो चाहो सो करने के लिए प्रस्तावित किया। तब उस मेहमान ने अपनी रखेल को बाहर उनके पास कर दिया। उन्होंने पूरी रात ही नहीं, भोर तक उसके साथ लीला-क्रीड़ा की और पौ फटते ही उसको छोड़ा। वह स्त्री फिर अपने पति के पास पहुँची और गिर गई। सुबह उसका पति उठा और उसे गदहे पर लाद कर अपने स्थान को रवाना हुआ। अपने घर पहुँचकर उसने अपनी रखेल को अंग-अंग कर काटा और उसके बारह टुकड़े करके इस्राएल के देश में भेज दिया।"* (**न्यायियों** 19 : 16-30)

यह है बाइबिल का उदाहरण। रखेल को, उसी व्यक्ति ने जो उसका तथाकथित पति था, स्वयं ले जाकर लुच्चों को कुकर्म करने हेतु सौंपा था, जबकि लुच्चे तो उस पुरुष का भोग करने की माँग कर रहे थे। रात भर एक के बाद एक पुरुष द्वारा वह भोगी गई, और वह बेचारी, बेकुसूर उनकी वासना की शिकार बनी मात्र इसलिए

कि उसके यार की दुर्गति न हो और आखिर उसका परिणाम यह हुआ कि उसी दगाबाज ने उससे विश्वासघात किया और उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिये, उसे कब्र में भी चैन से सोने नहीं दिया और दूर देश उन टुकड़ों को भेज दिया। कारण मात्र यह था कि वह महिला थी, पुरुषों के अत्याचार सहना उसकी किस्मत में बदा था और बलिदान देकर बुरी मौत मरना उसकी नियति थी। पूर्व के लोग अपनी महिलाओं की आन-बान की रक्षा की खातिर भयंकर युद्ध लड़ते थे और इस्राएल के लोग महिला को निम्न स्तर की वस्तु समझते थे। औरत को जैसा और जब चाहा भोगा और फिर उसको गाजर-मूली की तरह काटकर फेंक दिया, यही औरत की उनकी निगाह में कीमत थी। सही आकलन किया जाए तो औरत की तनिक भी कीमत नहीं थी।

2. *"गिलादी यावेश में जाकर तुम स्त्रियों एवं बच्चों का तलवार से नाश करो, ऐसा मंडली के बारह हजार शूरवीरों को आदेश दिया। उनको सब पुरुषों और जितनी स्त्रियों ने पुरुष का मुँह देखा हो, पूर्णतः नष्ट कर दो। उन्हें गिलादी यावेश के निवासियों में चार सौ जवान कुमारियाँ मिली, जिन्होंने पुरुष का मुँह नहीं देखा था। उन्हें वे कनान देश की छावनी में ले आए। वे स्त्रियाँ बिन्यामीनों को भोगने को दी गई किन्तु वे उनके लिए कम पड़ी।"* (**न्यायियों** 21 : 10-14) *"तब शीलों की स्त्रियाँ नाचने को निकली, तो बिन्यामीनों ने अपनी छुपने के स्थान से निकलकर अपनी गिनती के अनुसार वे नाचनेवाली स्त्रियाँ पकड़ली और अपने स्थान को लौट गये।"* (**न्यायियों** 21 : 20-24)

बाईबिल के अनुसार किसी की पत्नी हुई तो उसको काटकर फेंक दिया और कुँवारी हुई तो उसको अपने हरम में दाखिल कर लिया। उस स्त्री की सहमति लेने की कोई आवश्यकता न थी

3. *"एली बहुत बूढ़ा हो गया था। उसने सुना कि उसके पुत्र सारे इस्राएल से कैसा व्यवहार करते हैं ? वे मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सेवा करनेवाली स्त्रियों के साथ कुकर्म भी करते हैं। "* (1-**शमूएल**-2 : 22)। बूढ़े एली ने उनको डाँटा और ऐसा काम न करने को कहा क्योंकि ऐसा करना प्रभु के विरुद्ध अपराध है। किन्तु किसी ने उसकी बात नहीं मानी। यानी आदमजात को प्रभु के विरुद्ध अपराध करने में भी कोई एतराज नहीं था। मनुष्यों के विरुद्ध क्या वे तो इतने मदमस्त हो गये थे कि महिला जहाँ भी मिली वे समय-कुसमय न देखते हुए अपनी कामवासना की पूर्ति जबरन किया करते थे ?

दाउद का उरियाह की बीबी से व्यभिचार

'तब नातान ने दाऊद से कहा, तू ही वही मनुष्य है। इस्राएल का प्रभु परमेश्वर यों कहता है, मैंने तेरा अभिषेक कराके तुझे इस्राएल का राजा ठहराया। और मैंने तुझे शाऊल के हाथ से बचाया। मैंने तेरे स्वामी का महल तुझे दिया। तेरे स्वामी की पत्नियाँ तेरे भोग के लिए दी। और मैंने इस्राएल का घराना तुझे दिया था। यदि वह थोड़ा था, तो मैं तुझे और भी बहुत कुछ देनेवाला था। तूने प्रभु की आज्ञा तुच्छ जानकर क्यों यह काम किया जो उसकी दृष्टि में बुरा था? हिती ऊरियाह को तूने तलवार से घात किया। और उसकी पत्नी को अपनी कर लिया। तूने ऊरियाह को अम्मोनियो की तलवार से मरवा डाला है।" (2 **शमूएल 12 : 7 - 9**)

क्या खूब स्वामी भक्ति थी दाऊद की? उसको इस्राएल का नरेश बनाया गया, उसको शाऊल के हाथ से बचाया। उसको स्वामी का महल एवं स्वामी की पत्नियाँ भोगने के लिए दी, फिर भी दाऊद ने इस्राएल के लौह पुरुष को मरवा दिया। सामाजिक आदर्श भी अवलोकनीय है कि एक राजा की पत्नियाँ दूसरे राजा को अंतरित कर दी गई, मानो वे इंसान नहीं थी, उनकी कोई भावनाएँ, लगाव, प्रेम-मोहब्बत नहीं थी, वे तो मात्र कठपुतली थी।

प्रभु की कार्यवाही

''प्रभु यों कहता है (दाउद) सुन, मैं तेरे घर में से विपत्ति उठाकर तुझ पर डालूँगा। तेरी पत्नियों को तुझसे लेकर तेरे सामने दूसरे को दूँगा और वह दिन-दुपहरी में तेरी पत्नियों से कुकर्म करेगा। तूने कुकर्म छिपाकर किया। पर मैं यह काम सब इस्राएली के सामने दिन-दुपहरी कराऊँगा।" (2 **शमूएल,** 12 : 11-12)

यानी कि स्त्रियाँ भी सजा का एक साधन हो गई। पहले पूर्व राजा से छीनकर दाऊद को दे दी—उनकी इच्छा बिना जाने और अब उनको लेकर दूसरों को देने की तथा उनसे व्यभिचार कराने की छूट दिन-दुपहरी में दे दी गई ।

दासी बन रिझाना

नाओमी की बहू रूत थी, उसने अपने पति, अपने श्वसुर तथा अपने पति के भाई की मृत्यु देखी, किन्तु अपनी सास के साथ बनी रही, जबकि उसके साथ की

देवरानी छोड़कर मैके चली गई। महलोन की पत्नी थी वह और अपनी सास की खूब परवा करनेवाली था। रूत बोअज के बैतलहम स्थित खेत में मजदूरी करने लगी। एक समय उसकी सास ने उसको कहा कि बेटी क्या वह उसके लिए ठाँव न ढूंढे? उसने बहू को बोअज नामक अपने कुटुम्बी का संदर्भ दिया और कहा—'वह तो रात को खलिहान में जौ फटकेगा। तू स्नान कर तेल लगा, वस्त्र पहिनकर खलिहान को जा। परन्तु जबतक वह पुरुष खा-पी न चुके, तब तक अपने को उस पर प्रकट न करना। जब वह लेट जाए, तब तू उसके लेटने के स्थान को देख लेना। फिर भीतर जा उसके पाँव उघार के लेट जाना। तब वही तुझे बताएगा कि तुझे क्या करना चाहिए? उसने उससे कहा, 'जो कुछ तू कहती है वह सब मैं करूँगी।' (**रुत** 3 : 2-5)। तब वह खलिहान गई और उसने अपनी सास की आज्ञा के अनुसार ही किया। आधी रात को वह पुरुष चौंक पड़ा। उसने उसका परिचय पूछा तो उसने उसकी रूत नामक दासी बताया। उसने कहा कि एक व्यक्ति और है जिसकी तुझ पर कृपा दृष्टि है, यदि वह तुझे नहीं अपनाएगा तो ठीक, वरना वही उसको अपना लेगा। वह सुबह तक उसके पैरों के पास पड़ी रही। सुबह बोअज ने इसके पहले कोई उठे और उसको देखे कि कोई स्त्री आई थी, अपनी चादर जो रात को उसको ओढ़ा दी थी उसको पकड़कर थामने को कहा और तब उसने उसमें पच्चीस किलो जौ डालकर उसको उठा दिया और उसको नगर की ओर रवाना कर दिया। उसी दिन बोअज ने उस दूसरे व्यक्ति से बात कर ली और उसके द्वारा रूत का भार उठाने से इंकार किये जाने पर रूत को खरीद ली और ब्याह करके उसको अपनी पत्नी बनाली। बोअज से रूत को ओबेद पुत्र हुआ। यिशै का पिता और दाऊद का दादा वही हुआ। (**रुत** 3 : 1-8, 4 : 1-17)

दासी बनकर एक व्यक्ति को रिझाना, उसके पैर खुले करके उसके पास लेट जाना, क्या धर्मग्रंथ का गरिमामय वर्णन कहा जाएगा?

बेटी की बलि

''जब यिप्तह मिस्पा अपने घर आया, तब उसकी बेटी डफ बजाती और नाचती हुई उसकी भेंट के लिए निकल आई। वह उसकी इकलौती बेटी थी। उसको छोड़ न तो कोई बेटा था और न कोई बेटी। उसकी देखते ही उसने अपने कपड़े फाड़कर कहा,'हाय मेरी बेटी! तूने कमर तोड़ दी (मूल में-तूने मुझे बहुत झुकाया)। तू भी मेरे कष्ट देनेवालों में सम्मिलित हो गई है, क्योंकि मैंने प्रभु को वचन दिया है, और मैं उसे टाल नहीं सकता।'' (**न्यायियों 11 : 34 से 35**)

''उसने अपनी मानी हुई मिन्नत को पूरी किया। उस कन्या ने पुरुष का मुँह कभी नहीं देखा था।'' (**न्यायियों** 11 : 39)

देखिये परमेश्वर की माया! मिस्पा की एकमात्र संतति उस की बेटी थी, उसको प्रभु के दिये वचन के पालन में कि जो घर लौटने पर उसको पहले पहल मिलेगा उसको वह परमेश्वर की होम बलि चढ़ायेगा। भक्त ने अपना वायदा पूरा किया और अपनी प्यारी एक मात्र बेटी की बलि चढ़ा दी। परमेश्वर की दयालुता का ख्रिस्त धर्म में बहुत बखान किया जाता है, किन्तु यहाँ भक्त ने अपना प्रण पूरा करने के लिए अपनी प्राण प्यारी बेटी को बलि चढ़ा दिया, किन्तु परमेश्वर में कुछ भी प्रतिक्रिया न हुई और उस मासूम एवं निर्दोष बच्ची को बचाने का कोई प्रयास नहीं किया गया क्या अब भी किसी की परमात्मा के दयालु और न्यायी होने की कोई आशा है?

ईसाई जगत में मध्यकाल में हजारों-हजार औरतों को जादूगरनी या टोनही बताया जाकर कत्ल करवा दिया गया। उनमें से शायद ही कोई टोनही रही हो, वास्तविक बात कुछ और थी। उन्होंने मर्दों के जोर-जुल्म, बलात्कारों, अत्याचारों, बच्चों के कत्लों या बच्चियों की बिक्री पर आवाज उठाने की हिमाकत की थी। परिणाम में उनको जिन्दा जलाया गया या कत्ल कर दिया गया, कोई न्यायिक क्रिया स्वरूप नहीं, चर्च की दादागिरी एवं जोर-जुल्म के कारण।

एक पुरानी कहावत है—कि स्त्री और मदिरा युवकों एवं वृद्धों की मदमत्त बना देती है। जीवन में बहार लाने, जीने योग्य बनाने, आप पर प्रेम की वर्षा करने, आपके हर कदम पर साथ देने, आपकी सेवा करने, आपको खुश रखने में नारी का सर्वाधिक हाथ है, किन्तु वही ईसाईयों द्वारा पददलित की गई।

यदि अब भी ईसाई लोग स्त्री रूपी ईश्वरीय उपहार की ठीक से, प्यार से सार-संभाल करें तो जीवन में स्वर्गिक सुख का अनुभव किया जा सकता है। यह अवश्य आवश्यक है कि स्त्री का इसके लिए सद्गुणी होना भी आवश्यक है। मनु ने कितना सुन्दर कहा है—'**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।** जहाँ नारी को सम्मान मिलता है, वहाँ देवताओं का निवास होता है।

2. परमेश्वर द्वारा स्त्री-पुरुष का सृजन

''फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ'' (**उत्पत्ति**- 1: 26)

''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, नर और

नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की''—(**उत्पत्ति** 1 : 27।)

'' और परमेश्वर ने उनको आशीष दी''—(**उत्पत्ति** 1 : 28)

इस प्रकार जब परमेश्वर ने आदम को अपने स्वरूप के अनुसार बनाया तो उसमें ईश्वरीय गुण क्यों कर नहीं आए? परमेश्वर नित्य धर्मी एवं पवित्र था तो आदम-प्रथम मानव-में उन गुणों का संमावेश क्यों कर नहीं हुआ? परमेश्वर नित्य था, तो आदम मर्त्य क्यों कर हुआ? परमेश्वर के गुणों से समाविष्ट न होने से यह अनुमान क्या सत्य नहीं है कि आदम को परमेश्वर द्वारा बनाये जाने का सिद्धान्त सही नहीं है? यदि आदम परमेश्वर के तुल्य बनाया गया तो ईश्वर को आदम के तुल्य ही होना चाहिए न? वैसी स्थिति भी नहीं है। जैसा जनक होगा वैसी संतति होना चाहिए, जो ईसाई धर्मशास्त्र के अनुसार न होकर भ्रमित करने वाली है।

'और प्रभु परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया" (**उत्पत्ति** 2 : 7)

'और प्रभु परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक उद्यान लगाया और वहाँ आदम को (जिसने उसे रचा था) रख दिया'—(**उत्पत्ति** 2 : 8।)

यदि परमेश्वर ने आदम को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया और आदम को भूमि की मिट्टी से बनाया तो आदम के साथ परमेश्वर भी मिट्टी का बना हुआ होना चाहिए, यदि इसे असंगत माना जाए तो फिर आदम को परमेश्वर ने अपने स्वरूप में उत्पन्न किया यह वर्णन मिथ्या है। फिर तो आदम के स्वरूप के अनुसार परमेश्वर का भी जीवन-मरण, वृद्धि-क्षरण, भूख-प्यास आदि दोष परमेश्वर में भी आना चाहिए न? यदि ऐसा हुआ तो परमेश्वर उसे कैसे कहा जाएगा, वह अनित्य न होकर मर्त्य हुआ न? ऐसी स्थिति में तौरेत का वर्णन मिथ्या होगा न? तब बाइबिल ईश्वर रचित कैसे मानी जा सकेगी?

बाइबिलीय नारी—आदम की एक पसली

''फिर प्रभु परमेश्वर ने कहा, आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिए एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उससे मेल खाए" (**उत्पत्ति** 2 : 18।)

''तब प्रभु परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, और जब वह सो गया तब उसने उसकी एक पसुली निकालकर उसकी सन्ती मांस भर दिया।''और प्रभु परमेश्वर ने उस पसुली को जो आदम में से निकाली थी, स्त्री बना दिया और

उसको आदम के पास ले आया। और आदम ने कहा, अब यह मेरी हड्डी में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है, सो इसका नाम नारी होगा, क्योंकि यह नर में से निकाली गई है" (**उत्पत्ति** 2 : 21-23)।

यदि बाइबिल का वर्णन सही माना जाए और माना भी जाना चाहिए क्योंकि यह धर्मग्रंथ से है किन्तु वह (**उत्पत्ति** 1 : 27 से मेल नहीं खाता है जिसमें यह बताया गया था कि उसने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया था और नर-नारी की सृष्टि की थी। यदि यह कथन ठीक होता तो नर एवं नारी दोनों की सृष्टि मिट्टी से होती और दोनों के नथनों में श्वास फूँका गया होता, किन्तु उसके विपरीत तौरेत में यह वर्णन किया गया है कि मिट्टी से आदम को बनाया गया ही नहीं था और उसके नथनों में श्वास फूँकी गई थी। जबकि हव्वा को मिट्टी से बनाया ही नहीं गया, वरंच आदम को नींद में सुलाकर आदम की एक पसुली निकाल कर हव्वा को बनाया गया था। इस नाते से सभी हव्वाएँ यानि नारियाँ मात्र एक पसुली की होनी चाहिए थी, जैसा कि वास्तविक जीवन में दीख पड़ना चाहिए था और आदम की जाति-पुरुष में एक पसुली कम होना थी, जैसा कि कहीं दिखलाई नहीं पड़ता है। इससे बाइबिल में विरोधाभास स्पष्ट भासता है, पुरुष एवं स्त्री की रचना में। इसी कारण आदम कहता है कि स्त्री उसकी हड्डी की हड्डी है और उसके मांस का मांस है। क्या मिट्टी से आदम के सदृश हव्वा का सृजन नहीं हो सकता था फिर उस स्त्री के नथनों में श्वास भी नहीं फूँकी गई, इस कारण उसमें जान कैसे आई, वह भी तो आत्मारहित ही हुई न ? यदि सृष्टि के सृजन में यह अंतर रहा कि स्त्री जाति में आत्मा नहीं रही और आदम की पसुली से सरजी जाने के कारण उसको निर्जीव बताया जाकर पुरुष की संगिनी नहीं, भोग की वस्तु बना दिया गया। मर्दों को औरतों पर हर जोर-जुल्म करने का पर्याप्त औचित्य इस सिद्धान्त से नहीं सिद्ध हुआ क्या ?

इतना ही नहीं, जिस मिट्टी से आदम को बनाया, घरेलू पशु, रेंगनेवाले पशु, पृथ्वी के वन पशु बनाएं, वे भी उससे नहीं बनाये गये और न उनके नथनों में श्वास फूँकी गई। इस कारण यह अनुमान लगाना सही हुआ कि उनमें भी प्राण नहीं है। तब प्राणहीन जीवों की हत्या, कोई पाप हो नहीं सकता ? इस कारण इन निर्जीव जीवों की मारकाट करने का भी अधिकार मर्द को प्राप्त हो गया। पशुओं के समान वृक्षों एवं वनस्पति जगत में भी निर्जीवता कही गई, अत: उनका उपयोग-दुरुपयोग करने का भी अधिकार प्राप्त हो गया, मनुष्य को।

किन्तु बाइबिल के रचनाकारों को यह विचार आया ही नहीं कि निर्जीव चीज

का आवागमन कैसे होगा और अपने अनुसार संतति या जाति को पैदा कैसे किया जा सकेगा है ? एक बेजान औरत क्या बच्चे का जनन कर सकती है ? न ही कोई पशु योनि की मादा ? उसी प्रकार जब तक प्राण रहता है, तभी तक जीवों की वृद्धि, कार्यक्षमता, चलना-फिरना, बच्चों का जनन हो सकता है, मृत होने पर नहीं। यदि आदमी को छोड़कर सभी जीव-आत्मा से वंचित रहते, तो सृष्टि एक दिन भी टिकी नहीं रहती। बाइबिल को किस प्रकार सही ठहराया जाएगा ? विज्ञान जीवों में प्राण की अवस्थिति प्रमाणित करता है, तब बाइबिल अवैज्ञानिक एवं अप्रामाणिक इस सिद्धान्त के कारण नहीं हुई क्या ?

पुरुष को सारे अधिकार और महिलाओं को पुरुष की खिदमत, उसके कहे अनुसार उचित-अनुचित कार्य करना, मर्द के इशारे पर उनको विक्रीत किया जाना, असह्य पीड़ा पहुँचाना, किसी तरह की सुविधा न दी जाना, नाजायज कार्यों को उनसे करवाना, उनकी अनिच्छा होने पर, भले ही उनकी जान क्यों न चली जावे उनको बच्चे पैदा करने की मशीन बना देना भाग्य विधान मिला ? शारीरिक-मानसिक यंत्रणाएँ दी जाना, उनके अंग-भंग कर देना, घर से बाहर कर देना, हत्या कर देना आदि होता आया है, हो रहा है व होता जाएगा।

आदम एवं हव्वा दोनों ने परमेश्वर की हिदायत के विरुद्ध काम किया था, किन्तु *''फिर स्त्री से उस (परमेश्वर) ने कहा मैं तेरी पीड़ा और तेरे गर्भवती होने के दु:ख को बहुत बढ़ाऊँगा, तू पीड़ित होकर बालक उत्पन्न करेगी, और तेरी लालसा तेरे पति की ओर होगी और वह तुझ पर प्रभुता करेगा"* (**उत्पत्ति** : 3 : 16)। जबकि आदम को दंड बहुत ही हल्का दिया गया— *''तेरे कारण शापित भूमि है तू उसकी उपज जीवन भर दु:ख के साथ खायेगा''*—(**उत्पत्ति** 3 : 17)

इस प्रकार आदम को तरजीही दंड दिया गया। यदि देखा जाए तो महिलाओं पर अत्याचार, बलात्कार, जबरिया कार्य, उनकी अवमानना करना, उनको गुलामों सा जीने को मजबूर करना, कष्ट से प्रसूत बच्चों पर अत्याचार करना, मारपीट करना, शारीरिक यातनाएं देने का जो प्रचलन हुआ है उसके पीछे बाइबिल की शिक्षा है, यही तो माना जाएगा।

इसके विपरीत भारतीय धर्मशास्त्रों में कभी नारी को बुराई, लांछन एवं घृणास्पद नहीं माना है। मनु महाराज ने तो महिलाओं को सर्वश्रेष्ठ आदर दिया है यथा—

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता (मनु. 3.56)

अन्य लेखकों ने भी नारी को सम्मान दिया है यथा—

'स्त्री, जगत की एक पवित्र स्वर्गीय-ज्योति है। वह पुरुष शक्ति के लिए जीवन सुधा है। त्याग उसका स्वभाव, प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है।'—आचार्य चतुरसेन—कुछ विदेशियों ने भी नारी को सम्मान दिया है, यथा— ''एक आदर्श स्त्री विश्व की महान विभूति है,'' (लावेल)

ईसाईयों में औरत को एक अनिवार्य अनिष्ट माना है, उसको घृणास्पद माना है, उसके त्याग, सेवा, स्नेह, सम्पूर्ण जीवन अर्पण एवं बलिदान को पैरों तले कुचला है, इसी कारण से वहाँ वह एक भोग सामग्री बनी या बना दी गई। उसका देवी, त्यागमय माँ का रूप, स्नेहमयी बहिन की छाया और अपने परिवार पर न्यौछावर होने के गुणों को भुला दिया गया है, इसी कारण वहाँ समाज का विघटन पारिवारिक टूटन एवं आपसी टकराव हो रहा है, जिससे सब कोई दुःखी है।

ईसाईयत के अनुसार औरत में वैसी आत्मा नहीं होती जो तर्क-बुद्धि एवं समझ से परिपूर्ण हो। उसमें केवल साधारण मन एवं भावना होती है, उसे आदमी के मन बहलाव के लिए बनाया गया है। स्त्री ज्ञानरहित होती है। उसे पुरुष के उपभोग हेतु बनाया गया था। उसे मैन 'Man' की रचना के बाद बनाया गया था, इसी कारण उसे वोमैन 'Woman' कहा गया था। वह ज्ञान रहित थी।

परमेश्वर ने 'मैन' को समस्त सृष्टि का मालिक बनाया था। मैन को समस्त सृष्टि एवं 'वूमैन' का बॉस बनाया गया था। इसीलिए मात्र उसी में आत्मा रखी गई थी। मैन सारी धरती को एवं औरत को अपने पूरे कब्जे में रखकर धरती से फसल लेवें, यह मत प्रतिपादित किया गया था।

3. कौटुम्बिक व्यभिचार

''परमेश्वर की ओर से बाइबिल दैविक प्रकाशना नहीं है। यह ईश्वर प्रेरित न होकर उसके विपरीत यह एक अनैतिक पुस्तक है''—जोसेफ लेविस।

कौटुम्बिक व्यभिचार का घृणित वर्णन बाइबिल में कई स्थानों पर आया है, इसे सामान्य सामाजिक आचरण ही माना गया है। अगम्यागमन का वर्णित रूप निकृष्ट एवं घृणित है। इन संबंधों को न तो निन्दित किया गया है, न ही अवांछनीय ठहराया गया है। न ही इस कारण संबंधित को दंडित किया गया है, न ही किसी भी प्रकार की आपत्ति उठाई गई है।

कैन ने अपनी बहिन आवान को अपनी पत्नी बना लिया और सेथ ने अपनी बहिन अजुरा को अपनी पत्नी बना लिया। इस प्रकार एक ही परिवार के स्त्री एवं पुरुषों में लैंगिक संबंध स्थापित होने लगे। आरम्भिक कौटुम्बिक संबंधों ने ही शायद कौटुम्बिक व्यभिचारों को बढ़ावा दिया होगा, ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है। बाद में नैतिकता या सदाचार की ओर लोगों ने जब ध्यान दिया, तो इसको अत्यन्त हेय माना जाने लगा होगा। तब इसे अभिशापित एवं अवैधानिक निरूपित किया गया होगा।

नूह से लौंडेबाजी—बाइबिल में कौटुम्बिक सहवास या समाज एवं धर्म द्वारा प्रतिबंधित अगम्यागमन का वर्णन प्रथमतया उत्पत्ति अध्याय में मिलता है। 'वह (नूह) दाख मधु' पीकर मतवाला हो गया, और अपने तम्बू के भीतर नग्न हो गया। तब कनान के पिताहाम ने अपने पिता को नंगा देखा, तो वह तम्बू के बाहर गया और अपने दोनों भाईयों को बतला दिया (**उत्पत्ति** 9 : 20-21)। नूह एक सदाचारी एवं धर्मात्मा आदमी था और उसका परमेश्वर से निकटस्थ संबंध था। 'वह अपने समय के लोगों में खरा था, और नूह परमेश्वर ही के साथ-साथ चलता था, और नूह के शेम, हाम और येपेत नामक तीन पुत्र उत्पन्न हुए (**उत्पत्ति** 6 : 9-10)। जब पृथ्वी की स्थिति बिगड़ गई, तब परमेश्वर ने सृष्टि का अंत करने का निश्चय किया। एकमात्र नूह को ही प्रभु ने धर्मी माना और उसे एक जहाज बनाने का आदेश दिया, जिससे पुनः सृष्टि की उत्पत्ति के लिए जीव जगत के एक-एक जोड़े को सुरक्षित रखा जा सके। नूह ने ऐसा ही किया। फिर जल प्रलय हुआ और इंसानी कुदरत में मात्र नूह, उसकी पत्नी, पुत्रों और बहुओं के अतिरिक्त सारी सृष्टि की समाप्ति हो गई (**उत्पत्ति** 6 : 13-22 7 : 1-24)। इस प्रकार नूह परमेश्वर के चुनिन्दा कुछ लोगों में से बचाया गया व्यक्ति था, जो स्वयं एवं उसके परिवार के अतिरिक्त कोई भी नहीं बचा था। इस काल में नूह का वय 600 वर्ष का था एवं 950 वर्ष की उम्र में उसका देहान्त हुआ। (**द न्यू बाईबिल डिक्शनरी, इंटर यूनिवर्सिटी प्रेस, लंदन पृ.** 891)

तब नूह के बेटों शेम एवं येपेत दोनों ने कपड़ा लेकर अपने कंधों पर रखा, और पीछे की ओर उलटा चलकर अपने पिता के नंगे बदन को ढाँप दिया, वे अपना मुख पीछे किये हुए थे, इसलिए उन्होंने अपने पिता को नंगा नहीं देखा (**उत्पत्ति** 9 : 23)। जब नूह का नशा उतर गया, तब उसको मालूम हुआ कि उसके छोटे पुत्र ने उससे क्या किया है? (**उत्पत्ति** 9 : 24)। इसलिए उसने कहा, कनान शापित हो; वह अपने भाई-बंधुओं के दासों का दास हो (**उत्पत्ति** 9 : 25)

इस घटना का जो विवरण बाइबिल में हैं, उसमें कुछ प्रछन्न संकेत हैं जिनकी विवेचना की जाना आवश्यक है। 'कनान' के पिता 'हाम' ने नूह को उस अवस्था में देखा और तंबू के बाहर आकर अपने उभय भाईयों को बताया, उन दो भाईयों ने आकर अपने पिता को ढँका, वह भी बिना देखें। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि 'शेम' और 'येपेत' ने अपने पिता के साथ कोई बेअदबी या अनैतिक कार्य नहीं किया न ही 'हाम' ने कोई गलत कार्य किया होगा। यदि ऐसा होता तो उनको या उनमें से दोषी व्यक्ति को अवश्य दंडित किया जाता। जबकि दंडित किया गया 'हाम' का पुत्र 'कनान', जिसे सभी भाई-बंधुओं का गुलाम बनाया गया। इससे यह संभाव्य है कि कनान ने कुछ अप्रतिष्ठापूर्ण कार्य अपने दादा के साथ अवश्य किया होगा। इसी कारण नूह ने उसको दंडित किया था।

नशा उतरने पर नूह को मालूम हुआ कि उसके साथ उसके छोटे पुत्र ने क्या किया है? (**उत्पत्ति** 9 : 24) यह छोटा पुत्र वस्तुत: उसका पौत्र था 'कनान' हाम का पुत्र था और 'हाम' 'नूह' का पुत्र था, इस कारण से 'कनान' पुत्र का पुत्र यानि पौत्र हुआ।

कनान के नाम से एक देश भी हुआ करता था जिसका 'हाम' पुत्र 'कनान' से निकट संबंध था अलब्राइट। बाद में 'अब्राम' एवं 'लूत' में अपने-अपने क्षेत्रों का बँटवारा हुआ तो 'कनान' क्षेत्र 'अब्राम' के हिस्से में आया। (**उत्पत्ति** 13 : 121)

'शेम' की वंश परम्परा में 'तेरह' का जन्म हुआ। तेरह के 'अब्राम', 'नाहोर' और 'हारोन' पुत्र हुए। 'हारोन' ने 'लूत' को जन्म दिया। इस प्रकार 'लूत' का बड़ा ताऊ 'अब्राम' हुआ। (**उत्पत्ति** 11 : 24-27)

लूत द्वारा अपनी कुँवारी बेटियों को सहवास के लिए अर्पित करने का प्रस्ताव — सांझ के समय दो दूत सादोम नगर के पास आये, तो लूत ने उनको दंडवत, मुँह के बल गिर कर किया और उनको कहा—'हे मेरे प्रभुओं! अपने दास के घर में पधारो और रात्रि भर विश्राम कीजिए।' किन्तु वे नहीं माने तो लूत ने बहुत विनती करके उनको अपने यहाँ ठहराया। उसने उनके लिए भोजन तैयार करा कर उनको खिलाया। रात को सादोम के नगरवासियों ने 'लूत' का घर घेर लिया और 'लूत' को कहने लगे, *'' जो पुरुष आज रात को तेरे पास आए हैं, वे कहाँ हैं?* ***उनको हमारे पास बाहर ले आ, कि हम उनसे भोग करें।''*** (**उत्पत्ति**-19 : 1-5)

तो यहाँ खुले आम व्यभिचार वह भी समूह द्वारा करने का कार्यक्रम था। 'लूत'

ने द्वार बंद करके किवाड़ के पीछे से कहा—'हे मेरे भाईयो! ऐसी बुराई मत करो। **सुनो! मेरी दो बेटियाँ हैं, जिन्होंने अब तक पुरुष का भोग नहीं किया है। इच्छा हो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर ले आऊँ और तुम को जैसा अच्छा लगे वैसा व्यवहार उनसे करो**, पर इन पुरुषों से कुछ न करो, क्योंकि वे मेरी छत के तले आए हैं।' उन्होंने कहा—'हट जा। उन्होंने 'लूत' को बाहर खींच लिया तो उन मेहमानों ने 'लूत' को वापस भीतर खींच लिया। (**उत्पत्ति** 19 : 6-10)। फिर उन्होंने छोटे-बड़े सबको अंधा कर दिया और लूत को अपने परिवार सहित उस स्थान से निकल जाने को कहा। वह अपनी पत्नी और दोनों बेटियों के साथ भाग खड़ा हुआ, फिर उस प्रदेश में आकाश से गंधक और आग बरसी और आग में सब कुछ भस्म हो गया। 'लूत' ने सोअर को छोड़ दिया और अपनी बेटियों के साथ गुफा में रहने लगा। (**उत्पत्ति** 19 : 11-29)

तो यह है एक बाप की सच्ची कहानी, जिसने अपने मेहमानों की सुरक्षितता के लिए अपनी दोनों बेटियों को जनसमूह को खुलेआम सहवास या वे जैसे चाहे वैसे उनका उपयोग करने के लिए प्रस्तुत कर दिया। बेटियों की मंगनी हो चुकी थी और बाप ने उनका उपयोग समाज द्वारा व्यभिचार करने के लिए अर्पित कर दिया। क्या ऐसे निकृष्ट बाप का वर्णन, जो अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अपनी बेटियों को खुले आम व्यभिचार कराने को समुत्सुक हो, किसी सभ्य समाज में मिलेगा? फिर यह वर्णन तो बाइबिल नामक दुनिया के तथाकथित सर्वश्रेष्ठ धर्मग्रंथ में है। मनुष्य के अध:पतन की चरम सीमा नहीं है, यह क्या? बाप तो अपनी बेटी की इज्जत के लिए अपने प्राण भी होम देता है, यहाँ वह उनको भीड़ को सौंपने को, खुद प्रस्ताव करके आगे लाता है। क्या इसके बजाय बाप को अपने जीवन की बलि देकर उनको बचाना नहीं था ? क्या एक बाप का ऐसा प्रस्ताव सही था? यह कैसा धर्म ग्रंथ ?

बाप-बेटियों का क्रमिक व्यभिचार— *''और लूत ने सोअर को छोड़ दिया और पहाड़ पर अपनी दोनों बेटियों के साथ रहने लगा। सभी लोग एक गुफा में रहने लगे। तब बड़ी बेटी ने छोटी से कहा, 'हमारा पिता बूढ़ा है, और पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं, जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए। अत: आ हम अपने पिता को दाखमधु पिलाकर उसके साथ सोएं, जिससे कि हम अपने पिता के वंश को बचाये रखें।' अत: उन्होंने उसी दिन, रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया। तब बड़ी बेटी जाकर अपने पिता के पास लेट गई। पर उसने न जाना, कि वह कब लेटी और कब उठ गई।''* (**उत्पत्ति** 19 : 30-33)

ऐसा हुआ कि दूसरे दिन बड़ी ने छोटी से कहा, *'देख, कल रात को मैं अपने पिता के साथ सोई। सो आज भी रात को हम उसको दाखमधु पिलाएं तब तू जाकर उसके साथ सोना कि हम अपने पिता के द्वारा वंश उत्पन्न करें।'* (**उत्पत्ति** 19 : 34) उन्होंने

उस दिन भी रात के समय अपने पिता को दाखमधु पिलाया और छोटी बेटी जाकर उसके पास लेट गई। पर उसको भी उसके सोने और उठने का समय का मालूम न हुआ। इस प्रकार लूत की दोनों बेटियाँ अपने पिता से गर्भवती हुई। बड़ी बेटी एक पुत्र जनी, और उसका नाम 'मोआब' रखा। वह मोआब नामक जाति का जो आज तक है, कुलपिता हुआ। और छोटी बेटी भी एक पुत्र जनी और उसका नाम बेनम्मी रखा। वह अम्मोनवंशियों का जो आज तक है, कुलपिता हुआ। (**उत्पत्ति** 19 : 35-38)

'मोआब' नाम बड़ी पुत्री के पुत्र का रखा गया। मोआब शब्द का अर्थ होता है 'पिता का वीर्य'। छोटी पुत्री के पुत्र का नाम बेनम्मी रखा गया, बेनम्मी का अर्थ होता है, 'मेरे कुटुम्बी का बेटा।' क्या कोई इस बात का विश्वास कर सकेगा कि लूत की पुत्रियों के सामने बूढ़े लूत' के अलावा दुनिया में कोई मर्द नहीं बचा था? 'पृथ्वी भर में कोई ऐसा पुरुष नहीं जो संसार की रीति के अनुसार हमारे पास आए।' (**उत्पत्ति** 19 : 31) करोड़ों लोगों में से लूत-पुत्रियों को अपना बाप ही मिला। बाप को दाखमधु पिलाया गया और बेटियाँ बाप के साथ सोई। स्त्री-पुरुष संबंध में यदि मर्द मदहोश हो जाए तो वह संभोग करने काबिल कैसे रहेगा? फिर तो यही मानना पड़ेगा कि लूत ने शराब पीने के बाद भी होशोहवास में अपनी पुत्रियों के साथ मैथुन किया था, यानि जानते-बूझते। यानि लूत एवं उसकी बेटियों दोनों को मालूम था कि वे लोग क्या कर रहे हैं? अतः बाइबिल के वर्णन की लीपापोती अर्थहीन है। स्पष्टतया शब्दजाल रचकर प्रतिबंधित संभोग बाप-बेटियों ने जानबूझकर किया। ईसाई मतावलम्बी कितना भी भ्रमजाल फैलावें, मामला पारदर्शक रूप से साफ है कि दोनों पक्षों ने समझते-बूझते हुए सज्ञानावस्था में खुशी-खुशी समाज विरोधी, एवं धर्मविरोधी कार्य किया है। ऐसे धर्मविरोधी कार्य को एक धर्मग्रंथ में स्थान देकर क्या उस धर्मग्रंथ की अवमानना नहीं हुई? क्या धर्मावरण में बद्ध इस कार्य से पाखंड को प्रश्रय नहीं दिया गया है? बाइबिल में इस धर्मविरोधी पाखंड पूर्ण कार्य के लिए कहीं किसी भी पक्ष की भर्त्सना नहीं की गई है, आखिर क्यों? बाप-बेटी, माँ-बेटे का सहवास शरीरशास्त्र समाजशास्त्र, धर्मदर्शन सभी दृष्टियों से भर्त्सना करने योग्य है। ऐसे कार्य का विवरण देकर क्या बाइबिल का अवमूल्यन नहीं किया गया है?

'बाइबिल के लेखकों को नैतिकता के सिद्धान्तों की अल्प मात्र ही चिन्ता थी'—जोसेफ लेविस।

जोसेफ लेविस का उद्धरण ईसाई धर्म की नैतिकता का सही आकलन है।

भाई की पत्नी से अवैध संबंध—नबी यूहन्ना ने राजा हेरोदेस को कहा था कि भाई की पत्नी को रखना उचित नहीं है। जब राजा हेरोदेस का जन्म दिन आया तो हेरोदियास की बेटी ने नाच दिखाकर राजा हेरोदेस को खुश कर लिया, तब राजा

ने उसको कहा कि जो कुछ वह माँगेगी वह उसे देगा। हेरोदियास (माँ) ने अपनी बेटी को पूर्व में ही समझा-बुझा दिया था कि राजा के पूछने पर उसे यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के सिर का तोहफा माँगना है। बेटी ने माँ की सिखावन के अनुसार नबी यूहन्ना का सिर ही माँगा। राजा भरी सभा में इस माँग के आने से बहुत दुःखी हुए, किन्तु भरी सभा में ली गई शपथ को मेहमानों के सामने तोड़ने से हिचकिचाए भी, और यूहन्ना का सिर काट कर लाने का आदेश दे दिया। यूहन्ना उनकी जेल में ही था। जेल से यूहन्ना का सिर काटकर थाल में लाया जाकर लड़की को प्रस्तुत किया गया। उसे लड़की अपनी माँ के पास ले आई। उसी समय यूहन्ना के चेले आए तो गाड़ने के लिए वह सिर दे दिया गया जिसे वे गाड़ने के लिए ले गये। (**मत्ती**-14 : 3-12, **मरकुस** 6 : 17-29, **लूका** 3 : 19-20)

हेरोदेस एवं फिलिप्पुस आपस में सौतेले भाई थे। तीनों संतों के वर्णनों में यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि फिलिप्पुस घटनाक्रम के समय जीवित था या उसकी मृत्यु हो चुकी थी। यदि उसकी मृत्यु हो चुकी थी तो हेरोदेस को अपने सौतेले भाई की विधवा से तत्सामयिक कानून के अनुसार शादी रचाने का हक था। यदि हेरोदियास को फिलिप्पुस ने तलाक दे दिया था तो भी वह राजा हेरोदेस से विवाह करने के लिए कानूनी तौर पर स्वतंत्र थी। यदि राजा हेरोदेस ने अपनी पूर्व पत्नी को तलाक दे दिया था तो भी वह (राजा) परिस्थिति रही होगी ऐसा अनुमान करना भी त्रुटिपूर्ण होगा, क्योंकि यदि ऐसा होता तो यूहन्ना विधवा हेरोदियास से विवाह करने को स्वतंत्र था किन्तु ऐसी परिस्थिति में नबी क्यों कर राजा को डांटता और अपने को जेल बंदी बनाता। नबी यूहन्ना प्रचलित कानूनों (धर्म) का ज्ञाता था। इससे यह स्पष्ट भास होता है कि न तो हेरोदियास का पति मर चुका था। न ही उसे तलाक मिल चुका था, क्योंकि ऐसा होता तो उसके दूसरा विवाह करने का रास्ता खुला ही होता, यह बात यूहन्ना भी जानता था, ऐसी स्थिति होती तो वह राजा को मना करने की हिमाकत भी नहीं करता। राजा हेरोदेस और उनकी भाभी हेरोदियस का इश्क धार्मिक कानूनों के विरुद्ध था, इसी कारण यूहन्ना ने मना किया था और अपनी जान गँवाई थी। अपने भाई की पत्नी से गैरकानूनी रूप से बिना शादी के अवैध शारीरिक संबंध उन दोनों का रहना कानूनन अपराध था। ऐसा शारीरिक संबंध जो उनका था, वह कौटुम्बिक व्यभिचार का ज्वलंत नमूना था।

इसलिए विद्वानों ने कहा कि : ''सच पूछा जाए तो शायद ही किसी धर्म ने ऐसी कभी शिक्षा दी हो, जो स्पष्टतया प्रचलित ज्ञान से असंगत रही हो या इतनी अनैतिक हो, जितने कि चर्च द्वारा ईसाईयत के सिद्धान्तों के उपदेश दिये जाते थे।'' (धर्म क्या है—लियो टाल्सटाय)

* पोप पॉल षष्ठ ने सन् 1977 में कहा था—''स्त्रियों क
कर दिया गया था, क्योंकि हमारा परमेश्वर पुरुष थ
आफ क्रिश्चियनिटी-हैलेन)

* ''ईसाई धर्म जैसा कि उनकी चर्चों में पालन कराया जाता है वह पूर्व में और वर्तमान में भी विश्व को नैतिक प्रगति में मुख्य रूप से शत्रुवत है। '' बर्टेंड रसैल (व्हाय आय एम नोट ए क्रिश्चियन एंड अदर ऐसेज आन रिलीजिन, लंदन 1996 पृष्ठ 26)

* ''मैं ऐसी कोई अन्य पुस्तक (बाइबिल के अलावा) के बारे में नहीं जानती हूँ जो औरत को पूरी तरह दासता में जकड़ती और बदनाम करती हो''—(एलिजाबेथ केंडी स्टेन्टन।)

* ''औरत एक अनिवार्य अनिष्ट है, एक स्वाभाविक प्रलोभन है, एक वांछनीय विपत्ति, घर पर मंडराती आपदा है, प्राणलेवा सम्मोहन और रंगी हुई बुराई है।'' (क्रस्टोना सेंट क्रिस्टास्टम)